ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

पूर्वी राजस्थान का ऐतिहासिक पुरातत्व के क्षेत्र में योगदान

प्रमीला यादव शोधार्थी इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

वर्तमान राजस्थान प्रदेश के पूर्व में अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, विराटनगर आदि क्षेत्र आते है। यह क्षेत्र पूर्व के उत्तरपूर्व में हरियाणा के दक्षिण में मध्यप्रदेश की सीमा से मिलता है। पूर्वी राजस्थान में अरावली श्रेणी का उत्तर–पूर्व, पूर्व व दक्षिण पूर्वी भाग सम्मिलित है। इस क्षेत्र में राजस्थान के विभिन्न राष्ट्रीय उद्यान व वन्य जीव अभ्यारण्य है। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर), सरिस्का वन्य जीव अभ्यारण्य (अलवर) वन्य विहार वन्य जीव अभ्यारण्य (धौलपुर) आदि।

पूर्वी राजस्थान में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के अनेक स्थल है जैसे विराटनगर, नोह (भरतपुर), बयाना (भरतपुर), इनका पुरातात्विक विभाग द्वारा उत्खनन किया गया है। इन स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों से इस क्षेत्र के पाषाण काल से लेकर उत्तर मध्यकाल तक के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

पूर्वी राजस्थान क्षेत्र ताम्र सम्पदा के लिए प्रसिद्ध है। मुगलकाल में यहाँ तांबे की खानें थी। तांबे का अधिक उत्पादन होने के कारण मुगल बादशाहों ने विराटनगर में एक टकसाल स्थापित की, जहाँ पर ताम्र शोधन के अलावा विभिन्न प्रकार के उपकरण बनाये जाते थे व सिक्के भी ढाले जाते थे।

क्षेत्रीय इतिहास एवं संस्कृति की पुर्नरचना में पुरातात्विक सामग्री का महत्वपूर्ण योगदान है। पुरातात्विक सामग्री द्वारा प्राचीन भारतीय इतिहास के अनेक अज्ञात व अल्पज्ञात पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। इसका मुख्य कारण है साहित्यिक स्त्रोतों का अभाव व अस्पष्टता तथा पुरातात्विक स्त्रोतों का प्रचुरता में उपलब्ध होना। क्षेत्रीय इतिहास के पुर्ननिर्माण के संदर्भ में पुरातत्व का महत्व अपेक्षाकृत अधिक हो जाती है क्योंकि क्षेत्रीय स्तर पर प्राप्त विभिन्न पुरातात्विक सामग्री जैसे मृद्भाण्ड, मूर्तियां, मुद्राएँ, अभिलेख, शैलचित्र, मूर्तियाँ आदि वहां के राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास की संरचना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रागैतिहासिक एवं आद्यैतिहासिक काल के बाद भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ई. पूर्व में ऐतिहासिक युग प्रारंभ होता है। पुरातात्विक प्राप्तियों के आधार पर प्रारंभिक ऐतिहासिक युग को ऐतिहासिक पुरातत्व के नाम से जाना जाता है।

राजस्थान के पुरातात्विक स्त्रोतों की परम्परा पुरानी है पिछले 5 दशकों में सर्वेक्षण और उत्खनन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है जिसमें राजस्थान के पुरातात्विक स्थल प्रकाश में आये हैं।

उत्तर भारतीय कृष्ण मार्पत पात्र (छतर्ं)

ऐतिहासिक युग का प्रारंभ उत्तरी काली पालिश युक्त मृद्भाण्ड संस्कृति के उदय से माना जाता है इस संस्कृति का उदय ऊपरी गंगा, यमुना दोआब से 550 ई. पूर्व माना गया।

इस संस्कृति के विकास का मुख्य क्षेत्र यमुना का विशाल मैदान था। इस संस्कृति से लोहे का व्यापक प्रयोग, मुद्रा की शुरूआत, विभिन्न व्यवसायों के चलन, व्यापार मार्गों का विस्तार और विभिन्न नगर केन्द्रों के उदय हुआ। राजनीति के क्षेत्र में विशाल महाजनपदीय एवं साम्राज्यीय राज्यों का उदय इस युग की विशेषता है। द्वितीय नगरीय क्रान्ति इसी युग की देन है।

विराटनगर जयपुर से 100 कि.मी. उत्तरपूर्व में स्थित है। विराटनगर से उत्तरी काली पालिश युक्त मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है। महाभारत काल में यह राजा विराट की राजधानी थी जहाँ पाण्डवों ने अपना एक वर्ष का अज्ञातवास का समय व्यतीत किया था। बैराठ के पुरातात्विक उत्खनन से ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र मौर्य काल में एक महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक केन्द्र था।

उत्तरी काले चमकीले मृद्भाण्ड

उत्तरी काले चमकीले मृद्भाण्ड परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाला सबसे प्राचीन स्थल विराटनगर है। इस स्थल का सर्वप्रथम विधिवत् उत्खनन दयाराम साहनी ने 1936–38 में किया। साहनी को विराटनगर उत्खन्न से मौर्य कालीन एवं प्राक् मौर्यकालीन सभ्यता के उसके अशेष मिले जिसका प्रतिनिधित्व उत्तरी काले चमकीले मृद्भाण्ड करते हैं विराटनगर से प्राप्त इस परम्परा के मुख्य पात्र प्यालें व तश्तरियां है जो विभिन्न आकारों के हैं। इसके अलावा हांडियाँ, लोटे, ढक्कन, मर्तबान भी उपलब्ध हुए। विभिन्न आकार के मृद्भाण्ड इस बात को प्रमाणित करते हैं कि ये दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले पात्र थे।

ये पात्र गहरे काले रंग के साथ–साथ हल्के काले व हल्के नीले रंग के थे जिन पर चांदी जैसी चमक थी। ये चाक पर बनाये जाते थे इनके निर्माण में महीन व साफ मिट्टी का प्रयोग किया जाता था। उत्तरी काले चमकीले मृद्भाण्ड 3 प्रकार के थे जैसे बहुत मोटे आकार के मृद्भाण्ड, मध्यम आकार के मृद्भाण्ड, बहुत पतले आकार के मृद्भाण्ड।

इस प्रकार के मृद्भाण्डों की खास बात ये थी कि इनमें स्वर्णिम चमक देखने को मिलती थी इसके साथ ही ये दुर्लभ पात्र थे क्योंकि इनके टूट जाने पर इन्हें तांबों के तारों में जोड़ा गया है इस प्रकार के मृद्भाण्डों का प्रसार मुख्य रूप से गंगा दोआब में हुआ। कुछ मृद्भाण्डों पर बोध धर्म से सम्बन्धित पवित्र चित्र अंकित है जैसे त्रिरत्न, स्वास्तिक, कमल, माला, चैत्यनुमा चित्र, अंगुलियों के निशान आदि।

अभिलेख

अभिलेखों का पुरातात्विक स्रोतों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। अधिकांशतः अभिलेख पत्थर या धातु सामग्री पर खुदे मिले हैं सभी अभिलेख पर तिथि अंकित नहीं है फिर भी उनकी विषय–वस्तु, भाषा–लिपि के आधार पर उनका काल स्थल निर्धारित हो जाता है। भारत में प्राप्त सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक है। पूर्वी राजस्थान से भी अभिलेख प्राप्त हुए हैं जैसे अशोक का बैराठ अभिलेख, विजयगढ़ का यौधेय अभिलेख, विजयगढ़ स्तम्भ लेख।

1. बैराठ अभिलेख – अशोक कालीन (तृतीय शताब्दी ई.पू.) का यह अभिलेख जयपुर जिले के विराटनगर तहसील में हनुमान डूंगरी से मिला है इसकी लिपि ब्राह्मी है एवं भाषा प्राकृत है। यह लघु शिलालेख डॉ. कार्लाइल को 1871–72 में प्राप्त हुआ।
2. विजयगढ़ का यौधेय अभिलेख (300 ई.) – संस्कृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखा यह अभिलेख भरतपुर (राज.) के बयाना नामक कस्बे से लगभग दो मील दक्षिण पश्चिम में स्थित विजयगढ़ नामक पहाड़ी दुर्ग की भित्ति के भीतरी भाग में लगा मिला। इस अभिलेख से कुषाण शक्ति के पतन के पश्चात् पुनः यौधेय गणराज्य का इस क्षेत्र में अधिकार होने का पता चलता है।
3. विजयगढ़ स्तम्भ लेख – यह स्तम्भ लेख मालव विक्रम संवत् 428 (सन् 371 ई.) का है इसकी भाषा संस्कृत है। इस शिलालेख में बताया गया है कि यशोवर्धन के सुपुत्र मुण्डरीक यज्ञ के अवसर पर यज्ञधर्म, कल्याण, समृद्धि, कीर्ति, वंश, भाज्य, भोग की वृद्धि के उद्देश्य से यह स्तम्भ लेख उत्कीर्ण कराया था।

भाबू शिलालेख – यह शिलालेख मूलतः विराटनगर में बीजक की पहाड़ी पर स्थित है जो शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण है। 1837 में कैप्टन बर्ट ने अशोक का प्रथम भाबु शिलालेख विराटनगर में खोजा जिसे कटवाकर 1840 में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता संग्रहालय में स्थानान्तरित कर दिया गया। इस शिलालेख में अशोक बौद्ध भिक्षु–भिक्षुणियों को उचित आचरण व अनुशासित रहने के आदेश देता है।

बैराठ अभिलेख

यह शिलालेख विराटनगर के उत्तर पश्चिम में स्लेटी रंग की एक शिला पर पाली भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है। इस शिलालेख की खोज 1871–72 में कार्लाइल ने की।

अशोक स्तम्भ – विराटनगर से अशोक स्तम्भ प्राप्त हुआ यद्यपि यह पूर्णतः भग्न अवस्था है। पाषाण स्तम्भ के विभिन्न आकार के खण्ड मिले हैं यहाँ एक पत्थर प्राप्त हुआ है यहाँ संभवतः अशोक स्तम्भ खड़ा किया गया इसमें बाही लिपि में अक्षर अंकित मिले हैं।

मूर्तियाँ

मूर्तियाँ का पुरातात्विक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है उत्खनन के बाद शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन, यक्ष, कुबेर आदि प्रतिमाएं बड़ी संख्या में प्राप्त हुई है।

शैव प्रतिमाओं में मुख्य रूप से विविध प्रकार के शिवलिंग मिले हैं। अधापुर (भरतपुर) में कुषाणकालीन शिवलिंग प्राप्त हुए थे। गामडी ग्राम (भरतपुर) से लाल पत्थर का एक शिवलिंग प्राप्त हुआ है जो अभय मुद्रा में है।

भरतपुर के पास चौमाभण्डपुरा से एक कुषाणकालीन चतुर्मुखी शिवलिंग प्राप्त हुआ है। वारावई ग्राम (भरतपुर) से विशाल शुंगकालीन वीर यज्ञ की प्रतिमा प्राप्त हुई है। सौंगर ग्राम (भरतपुर) से आसनस्थ शुंगकालीन यज्ञ मूर्ति प्राप्त हुई है। नोह (भरतपुर) से (जक्खा बाबा) की विशालकाय प्रतिमा मिली है।

मुद्रा

पुरातात्विक सामग्री में मुद्रा का महत्वपूर्ण स्थान है। मुद्राओं के अध्ययन से राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, भौतिक पक्षों के साथ–साथ तत्कालीन कला, भाषा, लिपि के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। पूर्वी राजस्थान से बड़ी संख्या में आहत, इण्डो यवन, कुषाण, यौधेय, स्थानीय शासकों की मुद्राएँ मिलती है।

नोह उत्खनन से एक आहत मुद्रा, मथुरा के क्षत्रिय हंगासम, वीरसेन तथा वरूणमित्र की मुद्राएँ तथा कुषाण शासक हुविष्क तथा वासुदेव की एक एक मुद्रा प्राप्त हुई है। नोह से यह यौधेय मुद्रा प्राप्त हुई है जिस पर यौधेयाना लेख उत्तकीर्ण है।

बयाना से सिक्कों की बहुत बड़ी संख्या में ढेर प्राप्त हुआ है। बयाना से गुप्त साम्राज्यीय सम्राटों की 1821 स्वर्ण मुद्रा प्राप्त हुई है। इन मुदाओं में चन्द्रगुप्त प्रथम के 10, समुद्रगुप्त के 183, कांचगुप्त के 16, चन्द्रगुप्त द्वितीय के 983, कुमार गुप्त के 628 तथा स्कन्दगुप्त की एक मुद्रा मिली है। गुप्त शासकों की मुद्रा ब्राही लिपि में व भाषा स्कन्दगुप्त है जिन पर छन्दोबद्ध लेख उत्कीर्ण है।

गुप्त शासकों ने विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ चलाई है समुद्रगुप्त ध्वजधारी, धनुर्धारी,

परशुधारी, व्याघ्रानिंहता, वीणाधारी और अश्वमेघ प्रकार की स्वर्ण मुद्राएं प्रमारित की। बयाना से समुद्रगुप्त की ध्वजधारी, काँचनामाधारी प्रकार की मुद्राएँ ही सर्वाधिक मात्रा में प्राप्त हुई है।

चन्द्रुप्त की धनुर्धारी, अश्वारोही, चक्रविक्रम प्रकार की मुद्रा मिलती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के बयाना से 57 छत्र प्रकार की मुद्राएँ प्राप्त हुई है।

बयाना से कुमार गुप्त की 628 स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त हुई है इसमें धर्नुधारी, अश्वारोही, व्याघ्रानिंहता, कार्तिकेय, छत्र, वीणाधारी, गरुड़ प्रकार की मुद्राएँ मिली है।

शैलचित्र

शैलचित्रों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के मानव के तत्कालीन जीवन एवं परिवेश की स्पष्ट और अस्पष्ट झांकियां देखने को मिलती है। राजस्थान भी शैलचित्रों की दृष्टि से सम्पन्न क्षेत्र है। बैराठ क्षेत्र (विराटनगर) शैलकला युक्त शैलचित्रों का भण्डार है।

पुरातात्विक खोजों ने निश्चित रूप से यह सिद्ध कर दिया कि प्रागैतिहासिक काल से ही मानव आवास के सर्वथा उपयुक्त था। चित्रित धूसर मृद्भाण्डों स्थल का पूरे पूर्वी राजस्थान क्षेत्र में विस्तार से यह स्पष्ट किया है कि यहाँ मानव आवास की व्यापकता व निरन्तरता बनी रही। पुरातात्विक उत्खनन के कारण प्रकाश में आये विभिन्न ऐतिहासिक स्थल विराटनगर, नोह, बयाना आदि से प्राप्त पुरातात्विक स्त्रोत सिक्के, अभिलेख, मृद्भाण्ड, मूर्तियाँ आदि से तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयल, श्रीराम : ''प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह'', 1982
2. गहलोत, सुखवीर सिंह : ''इम्पोरटेन्ट इन्सक्रिप्सन्स ऑफ राजस्थान'', 1991
3. साहनी, दयाराम : ''आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स एण्ड एक्सकैवेशन एक्ट बैराठ'' 1936.
4. परमार, बी.एम.एस. : ''युगो–यगो में राजस्थान सिक्को के माध्यम से'', 1973.
5. अग्रवाल, आर.सी. : ''गामडी (भरतपुर) का अद्वितीय शिवलिंग'', शोध पत्रिका, 1972
6. शर्मा, सी.एल. : ''मत्स्य संघ का पुरातात्विक एवं राजनीतिक इतिहास'', 1994
7. सक्सेना, आशुतोष : ''राजस्थान का ऐतिहासिक पुरातत्व'', 1991